तीन चरणों में बीएड की काउंसिलिंग 19 से

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित बीएड संयुक्त प्रवेश काउंसिलिंग का आयोजन 19 नवंबर से तीन चरणों में होगा। काउंसिलिंग के दिशा-निर्देश विश्वविद्यालय की वेबसाइट www. lkouniv. ac. in पर अपलोड कर दिए गए हैं। प्रवेश समन्वयक प्रो. अमिता बाजपेयी ने बताया कि काउंसिलिंग की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन होगी। इसमें मुख्य काउंसिलिंग और फिर पूल कॉउंसिलिंग के बाद सीधे प्रवेश दिया जाएगा। अभ्यर्थियों को अपनी स्टेट रैंक के अनुसार काउंसिलिंग प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर मिलेगा। मुख्य काउंसिलिंग में पहले दिन 1 से 50,000 तक स्टेट रैंक वाले अभ्यर्थी हिस्सा ले सकेंगे। आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण रहेगा। ब्यूरो

PIONEER PAGE 4

19 से शुरू होगी बीएड की ऑनलाइन काउंसिलिंग

लखनऊ(पीएनएस)। प्रदेश भर में बीएड संचालित कालेजों में दाखिले को लेकर काउंसिलिंग की प्रक्रिया 19 नवम्बर से शुरू होगी। काउंसिलिंग की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन सम्पन्न होगी। सोमवार को यह जानकारी बीएड एंट्रेंस एग्जाम 2020 की स्टेट नोडल कोआर्डिनेटर प्रो. अमिता बाजपेई ने दी है। डॉ. बाजपेई ने बताया कि काउंसिलिंग चार चरणों मे होगी। अभ्यर्थियों को अपनी स्टेट रैंक के अनुसार काउंसिलिंग प्रक्रिया में भाग लेने का मौका मिलेगा। मुख्य काउंसिलिंग में पहले दिन एक से 50,000 तक स्टेट रैंक वाले अभ्यर्थी शामिल हो सकेंगे। आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के अभ्यार्थियों के लिये इस बार 10 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गयी है। उन्होंने बताया कि इस बार अभ्यर्थियों को काउंसिलिंग के समय शून्य शुल्क का लाभ नहीं दिया जाएगा।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

ऐ मेरे वतन के लोगों...लिखने वाले कवि प्रदीप भी थे लविवि के छात्र

लखनऊ विश्वविद्यालय ने देश और समाज को अपने विद्यार्थियों के माध्यम से काफी कुछ दिया है। यहां के विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्र में शीर्ष तक पहुंचे हैं। यही वजह है कि स्थापना दिवस पर विभिन्न क्षेत्र में शीर्ष पर पहुंचने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित करने की परंपरा रही है। लविवि में शताब्दी समारोह की शुरुआत 19 नवंबर को होगी और समारोह 25 नवंबर तक चलेगा। इसमें विभिन्न आयोजन होने हैं। इस दौरान विभिन्न क्षेत्र में सफलता के शिखर पर पहुंचने वाले लविवि के पूर्व छात्रों की जानकारी देने के अमर उजाला के प्रयास की पहली कड़ी...।

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आंख में भर लो पानी...और दे दो हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल...जैसी अमर कृतियां रचने वाले कवि प्रदीप लखनऊ विश्वविद्यालय की माटी से ही निकले हैं। अपने शताब्दी वर्ष में चल रहे लविवि ने अपनी माटी से कवि प्रदीप की तरह साहित्य के हजारों दीपकों का सृजन किया है। लविवि के पूर्व छात्र और हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष रहे प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने देश के इस महान कवि पर शोध प्रबंध कराया था। इसके अनुसार कवि प्रदीप का जन्म उज्जैन में हुआ था, लेकिन स्नातक की पढ़ाई करने के लिए वे लखनऊ आये थे। उस समय उनके बड़े भाई राधा बल्लभ द्विवेदी हिंदी विषभारती के संपादक थे। कवि प्रदीप का असली नाम रामचंद्र नारायण द्विवेदी था। लविवि से हिंदी विषय के साथ उन्होंने 1938 में बीए की उपाधि प्राप्त की थी। इस बीच में वे मंचीय कवि के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। उनकी लोकप्रियता उन्हें मुंबई तक खींचकर ले गई। जहां पर उन्होंने उर्दू गीतों के दौर में हिंदी कविता के माध्यम से अपनी पहचान बनाई। वर्ष 1962 में चीन के आक्रमण के दौरान उन्होंने शहीद सैनिकों की याद में ऐ मेरे वतन के लोगों.....जैसा अमर गीत लिखा। लता मंगेशकर ने इसे जब मंच पर गाया तो कहा जाता है कि पंडित जवाहर लाल नेहरू भी अपने आंसू नहीं रोक पाए थे।

कवि प्रदीप।

निराला जी के लेख के बाद हो गए मशहूर

प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित बताते हैं कि कवि प्रदीप लखनऊ में मुख्यतः तीन लोगों के संरक्षण में रहे। पंडित शिव नारायण चतुर्वेदी, जगमोहन अवस्थी और महाप्राण पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी निराला। निराला जी ने 1938 में माधुरी पत्रिका में उन पर एक लेख लिखा था। इस लेख ने उन्हें काफी मशहूर कर दिया। इसके बाद न चाहते हुए भी लोगों के कहने पर उन्हें फिल्म जगत जाना पड़ा। जबकि वास्तव में वे एक शिक्षक बनना चाहते थे और उन्होंने सिटी कॉलेज से टीचर्स ट्रेनिंग भी पूरी की थी।

साहित्य के क्षेत्र में रही है फेहरिस्त

डॉ. रामविलास शर्मा, अनूप शर्मा, राव राजा श्याम बिहारी मिश्रा, राव राजा सुखदेव बिहारी मिश्रा, कुंवर नारायण, कैलाश बाजपेई, रघुवीर सहाय, गिरिजा कुमार माथुर, उदय भान सिंह, डॉ. रामचंद्र तिवारी, डॉ. भागीरथी, डॉ. पीतांबर दत्त बर्थवाल, अली सरदार जाफरी, प्रो. मसूद हसन रिजवी, डॉ. यूसुफ हुसैन मुसफी, डॉ. एहतेशाम हुसैन, नुरुल हसन हाशमी, प्रो. मुस्तफा हसन अल्वी, प्रो. शमशेर बहादुर सामदी, प्रो. मो. यूनुस नगरमी, प्रो. शम्स तबरेज खान आदि। जबकि आर्टटी कॉलेज से कुर्तुलुन हैदर, अतिया खान और इस्मत चुगताई आदि ने भी लविवि की डिग्री प्राप्त की है।

कवि, लेखक और साहित्यकार किसी भी माटी की असली फसल होते हैं। उनकी कीर्ति सिर्फ उनके जीवनकाल में ही नहीं, बल्कि युगों-युगों तक चमकती रहती है। लखनऊ विश्वविद्यालय धन्य है जो यहां से साहित्य की इतनी विभूतियां निकली हैं। -प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, साहित्यकार और लविवि में हिंदी के पूर्व विभागाध्यक्ष

मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं कि मैंने अपनी पढ़ाई उस विश्वविद्यालय से की है जहां से साहित्य की इतनी विभूतियां जुड़ी रही हैं। अवध की यह जमीन आने वाले अनेकों साल तक इसी तरह साहित्यकारों का सृजन करती रहेगी, यही मेरी कामना है। - यतीन्द्र मिश्र, साहित्यकार और लविवि के पूर्व छात्र

इनकी लेखनी भी बिखेर रही चमक

कुंवर नारायण : अंग्रेजी में पढ़ाई और हिंदी में लेखन

कुंवर नारायण ने 1951 में लविवि से अंग्रेजी साहित्य में एमए की परीक्षा पास की थी। अंग्रेजी में पढ़ाई के बावजूद वे हिंदी में लेखन करते थे। उनकी प्रसिद्धि मालाराम और वालेरी जैसे फ्रांसीसी प्रतीकवादी कवियों और उसके बाद कैवाफी और बोर्जेस जैसे कवियों की कविताओं के अनुवादों की वजह से भी होती है। उन्होंने कविता, महाकाव्य कविता, लघु कथाएं, साहित्यिक आलोचना, अनुवाद, विश्व सिनेमा पर निबंध, इतिहास और भारतीय शास्त्रीय संगीत पर लेखन किया है। इनके लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, कबीर सम्मान, व्यास सम्मान, लोहिया सम्मान, शलाका सम्मान, वारसॉ विवि के मानद पदक और प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीयअंतर्राष्ट्रीय लेखक के लिए इटली के प्रेमियों फेरोनिया जैसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रघुवीर सहाय : 'लोग भूल गए हैं' के लिए साहित्य अकादमी

हिंदी कवि, लघुकथाकार, निबंधकार, साहित्यिक आलोचक, अनुवादक और पत्रकार के रूप में रघुवीर सहाय ने काफी नाम रोशन किया। उन्हें उनके काव्य संग्रह, लोग भूल गए हैं के लिए 1984 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग से पढ़ाई की थी।

मनोहर श्याम जोशी : हम लोग और बुनियाद के लेखक

मनोहर श्याम जोशी को भारतीय टेलीविजन के पहले सोप ओपेरा के लेखक हम लोग के रूप में जाना जाता है। इसके साथ ही बुनियाद, ककक्काजी कहिन का भी लेखन उन्होंने किया। कायाप नाम के उपन्यास के लिए उन्होंने साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता था।

गिरिजा कुमार माथुर : हम होंगे कामयाब से बनी पहचान

गिरिजाकुमार माथुर को लोकप्रिय अंग्रेजी गीत 'वी शैल ओवरकम' के अनुवाद 'हम होंगे कामयाब' के लिए जाना जाता है। उन्होंने संगीत के साथ-साथ साहित्य की भी बहुत सेवा की। गिरिजा कुमार माथुर को हिंदी के सबसे महत्वपूर्ण लेखकों में से एक माना जाता है, क्योंकि हिंदी साहित्य को आधुनिक बनाने और उनके विभिन्न माध्यम से इसे बढ़ावा देने के प्रयास किये। वे आकाशवाणी से भी लंबे समय तक जुड़े रहे।

राम विलास शर्मा : शिक्षण के साथ कॅरिअर की शुरुआत

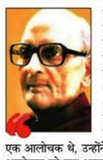

डॉ. राम विलास शर्मा की पहचान प्रगतिशील युग मे प्रख्यात कवि के रूप में है। उन्होंने लविवि में व्याख्यता के रूप में अपना कॅरिअर शुरू किया और फिर आगरा के बलवंत राजपूत कॉलेज चले गए। वे मूल रूप से एक आलोचक थे, उन्होंने जीवनी-ऐतिहासिक आलोचना को नया आयाम दिया और मार्क्सवादी दृष्टिकोण से भाषाई और साहित्यिक मुद्दों का विश्लेषण किया। हिंदी साहित्य सम्मेलन के एक सत्र में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पर दिए अपने विद्वतापूर्ण लेख के साथ वे 1939 में आलोचक के रूप में सुर्खियों में छा गए थे।

NBT PAGE 4

एलयू को सेंट्रल यूनिवर्सिटी का दर्जा मिलने की आस

शताब्दी वर्ष पर पीएम कर सकते हैं ऐलान, लूटा ने उठाई थी मांग

■ **एनबीटी, लखनऊः** एलयू 100वें वर्ष पर सेंट्रल यूनिवर्सिटी का दर्जा पाने की आस लगाए है। एलयू प्रशासन को उम्मीद है कि स्थापना दिवस पर आ रहे पीएम मोदी एलयू के लिए, बीबीएयू, बीएचयू और अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की तर्ज पर केंद्रीय विवि का दर्जा देने का ऐलान कर सकते हैं। इसके लिए लूटा की ओर से अभियान भी चलाया गया था।

एलयू की नैक रैंकिंग मात्र बी प्लस है। जानकार इसकी बड़ी वजह विवि को मिलने वाली कम ग्रांट को मानते हैं। विवि को मौजूदा समय में 300 करोड़ के बजट में केवल 32 करोड़ रुपये की ग्रांट मिलती है। वहीं, केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने से एलयू की ग्रांट कई गुना बढ़ जाएगी। इससे विवि को कई नए कोर्सेज और नई पहचान भी मिल सकती है। साथ ही अकैडमिक्स में भी काफी सुधार आ जाएगा। शताब्दी वर्ष समारोह के तय कार्यक्रम के अनुसार पीएम 15 मिनट के वर्चुअल संबोधन में पूर्व और मौजूदा विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण संदेश देंगे। एलयू के कुलपति प्रो.आलोक कुमार राय ने बताया कि सेंट्रल यूनिवर्सिटी होना गर्व का विषय है। निर्णय सरकार ही कर सकती है। 100वें स्थापना वर्ष पर निर्णय होना गौरव की बात होगी।

HINDUSTAN PAGE 7

19 नवम्बर से होगी बीएड काउंसलिंग

लखनऊ। बीएड की काउन्सिलिंग 19 नवम्बर से होगी। विश्वविद्यालय ने इसके लिए तैयारियां पूरी कर ली हैं। काउन्सलिंग की सारी प्रक्रिया ऑनलाइन होगी। लोग घर बैठे ही काउन्सलिंग में शामिल हो सकेंगे। काउन्सलिंग के 3 प्रमुख चरण होंगे - मुख्य काउन्सलिंग फेज एक से चार तक होगी। पूल काउन्सलिंग तथा सीधे प्रवेश होगा। अभ्यार्थियों को अपनी स्टेट रैंक के अनुसार काउन्सलिंग प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

i-NEXT PAGE 2

काउंसिलिंग के फर्स्ट राउंड में 50 हजार स्टूडेंट्स

बीएड में एडमिशन के लिए होने वाली काउंसिलिंग का शेड्यूल जारी

LUCKNOW (16 Nov, inext): प्रदेश के बीएड कॉलेजों में एडमिशन के लिए काउंसिलिंग 19 नवंबर से शुरू हो रही है. इसका शेड्यूल लखनऊ यूनिवर्सिटी ने जारी कर दिया है. तीन चरण में होने वाली काउंसिलिंग में रैंक के अनुसार स्टूडेंट्स शामिल होंगे. इसके बाद पूल काउंसिलिंग और फिर डायरेक्ट एडमिशन का मौका दिया जाएगा.

जीरो फीस का लाभ नहीं

बीएड कोऑर्डिनेटर प्रो. अमिता वाजपेयी ने बताया कि काउंसिलिंग के पहले चरण में एक से 50 हजार रैंक तक वाले स्टूडेंट्स शामिल होंगे. आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के स्टूडेंट्स के लिये इस बार 10 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गयी है. स्टूडेंट्स को इसका फायदा काउंसिलिंग के समय ही दिया जाएगा. इस बार स्टूडेंट्स को काउंसिलिंग के समय जीरो फीस का लाभ नहीं मिलेगा. सभीको काउंसिलिंग के समय निर्धारित फीस जमा करनी होगी. फीस न जमा करने वाले की सीट लॉक नहीं की जाएगी.

JAGRAN CITY PAGE I

देश स्वतंत्र होने के बाद ऐतिहासिक था पहला दीक्षा समारोह

● प्रज्ञा मिश्र

आजादी के कुछ माह बाद देश में हर्ष और विषाद का माहौल था। इसी बीच लविवि का पहला दीक्षा समारोह हुआ। वह खास मौका था, क्योंकि उस दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, उप्र की राज्यपाल सरोजनी नायडू, मुख्यमंत्री गोविंद वल्लभ पंत और कुलपति आचार्य नरेंद्र देव की मौजूदगी थी।

समय बीता और इस अप्रतिम अवसर के साथ दुर्भाग्य भी जुड़ गया। दीक्षा समारोह से जुड़ी अनेक यादें कुछ सालों बाद हिंसक छात्र आंदोलन में जला कर खाक कर दी गईं। उस दौरान उपस्थित रहे सेवानिवृत्त लोक प्रशासन विभाग के प्रो. जवाहर सेठ की स्मृति पटल पर वे बातें अब भी जीवंत हैं। वे बताते हैं, वो सुनहरा वक्त था। उसे भुलाया नहीं जा सकता। मैं 30 के दशक में लविवि में पढ़ाने के लिए पहुंचा था। जिसके बाद स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान काफी व्यवधान पड़े। आंदोलन किए जाते रहे। मगर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तय हुआ कि 1948 में नवंबर में दीक्षा समारोह होगा। उसमें देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को आमंत्रित किया गया। वे आए और विद्यार्थियों को संदेश दिया था कि वे नवभारत के गठन को तैयार हो जाएं। हमको सशक्त भारत बनाने के लिए सबसे अधिक सशक्त विद्यार्थी शक्ति को है। आचार्य नरेंद्र देव तब विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास करते रहे।

लखनऊ विश्वविद्यालय ● फाइल फोटो

● आजादी के बाद पहला दीक्षा समारोह 1948 में हुआ, तब लविवि का गौरव था चरम पर

● जवाहर लाल नेहरू, गोविंद वल्लभ पंत, सरोजनी नायडू व आचार्य नरेंद्र देव रहे मौजूद

1947 में मिली स्वतंत्रता के बाद तय हुआ कि 1948 में नवंबर में दीक्षा समारोह होगा

जेके ग्रुप की मदद से बना था जेके ब्लाक

प्रो. जवाहर सेठ बताते हैं कि उस वक्त समाज शास्त्र विभाग के भवन का निर्माण किया जाना था, मगर बजट नहीं था। इसकी वजह से उद्योगपतियों से आर्थिक मदद ली जा रही थी। जेके ग्रुप से भी सहायता ली गई। इस समूह के जेके सिंघानिया कानपुर के निवासी थे। उनकी सहायता से जेके ब्लाक बनकर तैयार हुआ था। आज यह ब्लाक अब समाजशास्त्र और सामाजिक कार्य विषयों के लिए प्रख्यात है।

लविवि में प्रवाहित होगी अध्यात्म की गंगा

स्थापना दिवस के बहाने समारोह में फहरेगी संस्कृति की पताका योगासन संग हैप्पीनेस लैब में सीखेंगे खुश रहने के तरीके

जिस विश्वविद्यालय में कभी ज्योतिष का कोर्स शुरू होने पर भारी विरोध हुआ था, वहां अब भारतीय संस्कृति के ज्ञान को प्राथमिकता मिल रही है। लविवि में स्थापना दिवस के बहाने अध्यात्म की गंगा भी बहेगी। ब्रह्मकुमारी की हैप्पीनेस लैब व इस्कॉन द्वारा गीता ज्ञान सत्र, योगासन और रागलीला का भव्य का आयोजन होगा। इनमें से कुछ को तो हमेशा के लिए जारी रखने की भी तैयारी की जा रही है।

90 के दशक के अंत में जब विश्वविद्यालय में ज्योतिष का कोर्स शुरू किया गया था, तब खासतौर पर कम्युनिस्ट गुट ने इसका जम कर विरोध किया था। ज्योतिष के ज्ञान को पाखंड बता कर उसका मजाक तक उड़ाया गया था, मगर अब समय बदल गया है। स्थापना दिवस समारोह से पहले भारतीय प्राचीन संस्कृति से जुड़े हुए नए शैक्षणिक सत्रों को विश्वविद्यालय में जोड़ा जा रहा है, ताकि अध्यात्म से विद्यार्थियों को जोड़ा जा सके और वे भारतीय संस्कृति को नजदीक से जान सकें। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय कहते हैं कि हमारी संस्कृति से विद्यार्थियों का जुड़ना बहुत आवश्यक है। हमारी सबसे संपन्न धरोहर की रखवाली युवा ही करेंगे।

पीएम से लखनऊ विश्वविद्यालय को केंद्रीय विवि घोषित करने की आस

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लखनऊ विश्वविद्यालय के 100 वें स्थापना दिवस समारोह में 25 नवंबर को वर्चुअली शामिल होंगे। इस अवसर पर लविवि पीएम से विवि को बीएचयू और अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की तरह केंद्रीय विवि घोषित करने की उम्मीद कर रहा है।

फिलहाल, लविवि की नैक (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद) रैंकिंग बी प्लस है। इससे लविवि को मिलने वाली ग्रांट भी कम है। विश्वविद्यालय को 300 करोड़ के बजट में केवल 32 करोड़ रुपये की ग्रांट मिलती है, मगर केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिल लाने से ग्रांट कई गुना बढ़ जाएगी। विश्वविद्यालय को नए कोर्स के साथ नई पहचान मिलेगी। पीएम मोदी स्थापना दिवस पर करीब 15 मिनट वर्चुअल संबोधन देंगे। इसमें लविवि को सेंट्रल यूनिवर्सिटी बनाने की मांग पर अमल होने की संभावना जताई जा रही है। इस संबंध में लूटा ने फरवरी में हुई अपनी बैठक में प्रस्ताव बनाया था। जिसे आगे प्रेषित भी किया जा चुका है। लूटा के पदाधिकारियों का कहना है कि पीएम से उम्मीद है कि लविवि को 100 वें साल में केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाने की घोषणा कर दें।

उम्मीद

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 25 नवंबर को करेंगे वर्चुअल संबोधन
- बीएचयू की तर्ज पर लविवि को केंद्रीय विवि बनाने की मांग

इस बारे में लखनऊ विवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय का कहना है कि केंद्रीय विवि होना गर्व का विषय है, मगर इसको लेकर निर्णय सरकार ही कर सकती है। 100वें स्थापना वर्ष पर ये निर्णय हो जाए तो अद्भुत होगा।

हैप्पीनेस लैब

हैप्पीनेस लैब की शुरुआत 21 नवंबर को की जाएगी। इस लैब में विद्यार्थियों को आत्मिक ज्ञान मिलेगा। विशेष सत्रों में बुरी आदतों को छोड़ने के उपाय बताए जाएंगे। माउंट आबू स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के साथ हुए एमओयू। मेनोरेल्म ऑफ अ्रहस्टडिज) के तहत ये हैप्पीनेस लैब टैगोर लाइब्रेरी में स्थापित की जा रही है।

गीता का ज्ञान

इस सप्ताह में लविवि का इस्कॉन से एमओयू हुआ है। इसके तहत 30 घंटे के गीता सत्र का आयोजन इस्कॉन द्वारा किया जाएगा। लविवि बाद में सप्ताह-सप्ताह पर सत्रों का आयोजन विद्यार्थियों के लिए करेगा। इससे विद्यार्थी गीता के रहस्य को जान पाएंगे।

प्रतिदिन योग

प्रतिदिन योग का आयोजन विश्वविद्यालय में किया जाएगा। इसके जरिये प्राचीन भारतीय परंपरा का ज्ञान देने के साथ शरीर को स्वस्थ रखने का प्रयास होगा। स्थापना दिवस समारोह के दौरान हर सुबह छह बजे से योग होगा।

कला व संस्कृति को बढ़ावा देने वाला परिसर

लविवि में 1977-78 में जिस समय मैंने दाखिला लिया तो वह इमरजेंसी के बाद का दौर था। नई चेतना के साथ खुलापन हावी था। छात्र राजनीति चरम पर थी। चुनाव और धरना-प्रदर्शन का दौर था। कई बार कैंपस में घेराबंदी होती थी। इसके बावजूद लविवि में कला और संस्कृति के लिए काफी स्थान था। मैंने 1978 में अखिल भारतीय स्तर पर पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया था। इसके बाद आईआईटी की ओर से आयोजित स्केचिंग प्रतियोगिता में भी पुरस्कार जीता। इन सबने मेरे लिए एमएसडी में जाने के लिए रास्ते खोले। उस समय विभाग में राज बिसारिया जैसे शिक्षक थे जो कि कला संस्कृति के साथ ही नाटक और रंगमंच के बारे में जानकारी देते थे। वह दौर ऐसा था कि कुंवर नारायण, अमृतलाल नागर, रणवीर सिंह बिष्ट और योगेश प्रवीण जैसे दिग्गज एक 17 साल के नौजवान के साथ किसी विषय पर चर्चा के लिए भी उपलब्ध रहते थे। उन सबके सहयोग से मेरे लिए कला और संस्कृति में जाने का रास्ता खुला। हम लोग अपनी मैगजीन निकाला करते थे। कल्चरल टीम अन्य संस्थानों में प्रतियोगिता के लिए जाती थी। लखनऊ में मैंने वह दौर भी देखा है जब लखनऊ महोत्सव और अन्य आयोजन में विवि के काफी छात्र उपस्थित रहते थे। शताब्दी समारोह के दौरान यह उम्मीद करूंगा कि परिसर में पहले की तरह कला और संस्कृति के लिए माहौल बने। - **सलीम आरिफ,** रंगमंच कर्मी और बॉलीवुड कलाकार

कला में दिखे लविवि के बहुआयामी रंग

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय का शिल्पकला संकाय नामी कलाकारों की नर्सरी रहा है। मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर फोटोग्राफी तक के दिग्गज यहां हुए हैं। यहां के शिक्षक तथा छात्र दोनों ने ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना और संस्थान का नाम रोशन किया है।

यहां के शिक्षक रहे हरन्मय राय चौधरी की बनाई मूर्तियां पूरे प्रदेश में अपनी भव्यता की कहानी कह रही हैं। लविवि में गांधीजी की कांस्य की प्रतिमा, लखनऊ चिड़ियाघर में स्थित संग्रहालय में किंग जॉर्ज पंचम की आदमकद मूर्ति, राजा रामपाल पार्क में स्थित राजा रामपाल की मूर्ति, ए पी सेन पार्क में स्थित एपीसेन की मूर्ति, ललित कला के पास स्थित महात्मा गांधी की मूर्ति और शिल्प कला संकाय में स्थित आदमकद मूर्ति भी उन्हीं बनाई हुई है। इसी तरह अवतार सिंह पंवार ने लखनऊ में स्थित हाथी पार्क को अपनी कला से आकार दिया है। यहां स्थापित ज्यादातर मूर्तियां उन्हीं की बनाई हुई हैं।

शिल्पकला संकाय में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. सम्पूर्णानन्द व अन्य।

परास्नातक पाठ्यक्रम शुरू कराने के लिए प्लेन हाईजैक

अपने संस्थान में परास्नातक की पढ़ाई शुरू कराने के लिए प्लेन हाइजैक करना, सुनने में अटपटा है पर लविवि के छात्र यह कारनामा भी कर चुके हैं। बात 1993 की है। आर्ट्स कॉलेज के छात्र गिरीश तिवारी (लखनऊ), सोमेंद्र इक्का (अंडमान-निकोबार) और गोपाल पंचरत्न (बिहार) व आनंद कुमार (बिहार) ही वे चार दोस्त हैं जिन्होंने 1993 में प्लेन हाईजैक कर कॉलेज में मास्टर्स इन परफॉर्मिंग आर्ट्स (एमएफए) शुरू करवाया। अब इसका नाम मास्टर्स इन विजुअल आर्ट्स (एमवीए) कर दिया गया है। इसमें प्रमुख भूमिका निभाने वाले गिरीश तिवारी बताते हैं कि उस इस काम के लिए नकली बंदूकें तैयार की गईं और लखनऊ से दिल्ली जा रही फ्लाइट (आईसी-436) को हाईजैक कर लिया। देशभर में हड़कंप मच गया। मौके पर पहुंचे राज्यपाल व आला अधिकारियों को उन्होंने अपनी मांग बताई। आश्वासन मिला तो रास्ते (फर्रुखाबाद) से प्लेन वापस अमौसी एयरपोर्ट आया।

शिल्पकला संकाय में पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू

इन कलाकारों ने रोशन किया नाम

असित कुमार हलदार, दिनकर कौशिक, मदनलाल नागर, सुधीर खास्तगीर, ललितमोहन सेन, आर एस बिष्ट, अवतार सिंह पंवार, नारायण कुलश्रेष्ठ, श्रीधर महापात्र, बद्रीनाथ नाथ हरन्मय राय चौधरी आदि।

कला एवं शिल्प महाविद्यालय : 1892 में हुई स्थापना

कला एवं शिल्प महाविद्यालय की स्थापना का इतिहास 18वीं शताब्दी से शुरू होता है। एक नवंबर, 1892 को इसकी शुरुआत स्कूल ऑफ इंडस्ट्रियल डिजाइन के रूप में की गई थी। वर्ष 1909 में इसे व्यवस्थित रूप से शुरू करने की योजना तैयार हुई। इसके बाद वर्ष 1911 में इसका उद्घाटन किया गया। न्थानियल हर्ड इसके पहले प्रिंसिपल थे। 1917 में इसका नाम बदलकर गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स कर दिया गया। अपनी स्थापना से लेकर 1975 तक स्वायत्त संस्था के रूप में चलता रहा। 1975 में कॉलेज को लविवि में मिला दिया गया। काफी समय तक यह लविवि के शिल्पकला संकाय और एक महाविद्यालय दोनों भूमिका में काम करता रहा। इसी साल कार्य परिषद में प्रस्ताव पास करके इसे पूरी तरह से विवि का संकाय घोषित किया गया है। इस महाविद्यालय ने देश को कई बड़े कलाकार दिए हैं।

रुपहले पर्दे पर बिखरी लविवि की आभा

लविवि से पढ़े विद्यार्थियों ने अपनी छाप सिर्फ कला और संस्कृति के क्षेत्र में ही नहीं छोड़ी है बल्कि रुपहले पर्दे पर भी अपनी आभा बिखेरी है। कई छात्र-छात्राओं ने बॉलीवुड और रंगमंच पर अपने सशक्त हस्ताक्षर दर्ज किए हैं। अमिताभ भट्टाचार्य से लेकर अतुल तिवारी तक यहां से निकले हैं। गायक अनूप जलोटा, मालिनी अवस्थी भी यही के विद्यार्थी हैं।

कई फिल्मों की शूटिंग का गवाह भी रहा परिसर

लविवि में सैफ अली खान की फिल्म बुलेट राजा के साथ ही हॉलीवुड फिल्मों, मिलियन डॉलर आर्म की शूटिंग भी हो चुकी है। मैं मेरी पत्नी और वो, ओमकारा, नेट फ्लिक्स की सीरिज है ताज महल 1989 आदि की भी शूटिंग हो चुकी है।

यादें

अनुशासन के साथ लगती थी मस्ती की पाठशाला

लखनऊ। सौ साल का लखनऊ विश्वविद्यालय न जाने कितनों के दिल में रचा और बसा है। खुशी के इस मौके पर क्यों न कुछ यादें ताजा की जाएं। मौका भी है दस्तूर भी कि यादों के झरोखों से इसकी विशेषताओं को उन्हीं की जुबानी जानें, जिन्होंने अपने करिअर को एक दिशा यहीं रहकर दी है। आइए हम भी बनें उन यादों का हिस्सा।

जगमोहन के गीत और गूंजती थीं महमूद की गजलें

1955 में दाखिला लिया था। हालांकि एक साल ही यहां रहा, लेकिन यादें ताउम्र की समेट ली थीं। सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र होने का अहसास कोने-कोने में था। अनुशासन में ब्रिटिश पीरियड वाली सख्ती दिखती थी, लेकिन मस्ती पर कोई रोक नहीं थी। गीत-गजलों के दीवाने युवा हर जगह दिख जाते थे। फिल्म जिद्दी का गीत चंदा रे जा रे...क्या धुन में गाती थीं लड़कियां। जगमोहन के गीत व तलत महमूद की गजलों के प्रति दीवानगी भी खूब थी। - **योगेश प्रवीण,** इतिहासकार

लड़के-लड़कियों के बीच परस्पर सम्मान का भाव था

1969 से 71 तक लविवि का स्टूडेंट रहा। कैफेटेरिया की फकौड़ी चाय का स्वाद आज भी जुबां पर है। सबसे खास ये कि लड़के-लड़कियों के बीच परस्पर सम्मान का भाव था। कभी नहीं सुना कि किसी लड़की को छेड़ा गया हो। लविवि हमारे लिए जिंदगी की पहली कड़ी थी, जहां हमने खुली आजादी में खुद को संभालना सीखा। जिम्मेदारी का भाव यहीं से आया। हमने यहीं सीखा कि खाली समय सही तरीके से कैसे गुजारना है। - **चंद्रप्रकाश,** यूनिवर्सल बुक सेलर, प्रेसीडेंट कनेक्ट लखनऊ

जहां पढ़ा, वहीं पढ़ाया, हमेशा हिस्सा रहूंगी

लविवि में पहला कदम एक स्टूडेंट के रूप में 1962 में रखा। आगे की पढ़ाई के लिए मास्को चली गई। 1972 में लौटी तो एक टीचर के रूप में। यानी जहां पढ़ी वहीं पढ़ाने लगी, ये खयाल आज भी सुकून के साथ-साथ गर्व का अहसास कराता है। गुलजार, जावेद अख्तर व कई शख्सियतों से रूबरू होने का मौका यहीं मिला। यही कहूंगी कि इसका हिस्सा हमेशा रहूंगी। - **प्रो. साबर